सावित्री और सत्यवान

वर्ष १२] आक्टोबर १९२८—आश्विन १९८५ [संख्या १०

डटे रहें

कितने ही सुख रहें बरसते, पर न काम करना छोड़ें।
कितने ही दुख रहें सताते, पर न कभी हिम्मत तोड़ें।
मौत सामने खेल रही हो, तो भी कभी न मुँह-मोड़ें।
डटे रहें; बस ! साहस-पूर्वक; ईश्वर से नाता जोड़ें।
करते करते काम, नाथ ! हम इन वचनों को पूर्ण करें।
जियें देश के लिए जियें, यदि मरें देश के लिए मरें।

'लहरी'

दुम किस काम आती है ?

एक बकरा था। उसके एक छोटी-सी दुम थी। पर उसकी समझ में नहीं आता था कि वह दुम से क्या काम ले। एक दिन उसने एक कुत्ते से पूछा—"भाई साहब, तुम अपनी दुम से क्या काम लेते हो ?" कुत्ते ने जवाब दिया—"मेरी दुम बचपन ही में काट ली गई थी। इसलिए मुझे दुम से काम लेने का मौक़ा नहीं पड़ा। पर मेरी मा मुझसे कहा करती थी कि कुत्ते जब दुश्मन से डरते हैं तब दुम दबा लेते हैं। शायद इसी अवगुण के कारण हम लोगों की दुम काट ली जाती है।"
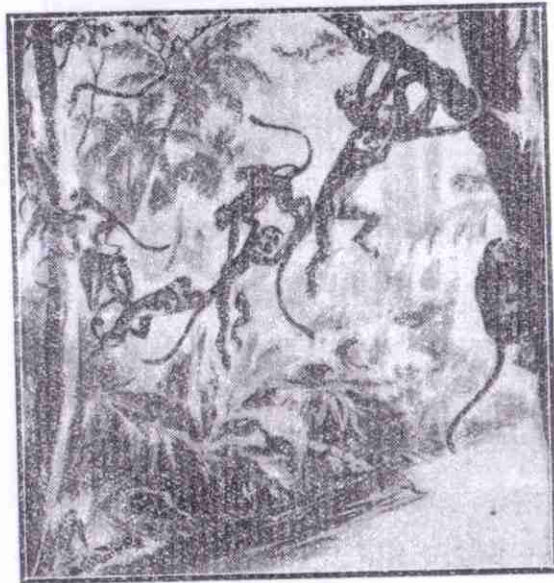
लङ्गूर नदी कैसे पार करते हैं ?

बकरे ने बैल से जाकर यही सवाल किया। बैल ने कहा—"हम दुम से मक्खियाँ उड़ाते हैं। पर हल या गाड़ी खींचते समय हाँकनेवाले कभी कभी हमें तेज़ चलाने के लिए हमारी दुम पकड़ कर खींचते हैं और मरोड़ते हैं इससे हमें बड़ी पीड़ा होती है और हम सोचने लगते हैं कि भगवान् हमें दुम न देता तभी अच्छा था।"

बकरा और आगे बढ़ा। और एक जङ्गल में जा पहुँचा। वहाँ लङ्गूरों ने एक दूसरे की दुम पकड़ कर एक नदी के ऊपर ख़ास पुल बना रक्खा था। नदी के दोनों तरफ़ के दो पेड़ खम्भों का काम दे रहे थे। पुल के ऊपर से लङ्गूरों के स्त्री-बच्चे नदी पार कर रहे थे। बकरा यह तमाशा देख कर चकित रह गया। मन ही मन सोचने लगा कि भगवान् हम बकरों को भी ऐसी ही दुम देते तो हम भी पुल बना कर अपने बाल-बच्चों को नदी पार ले जाते।

नदी में कुछ मछलियाँ थीं। वे अपनी दुम के सहारे तैर रही थीं। घड़ियाल थे, वे भी दुम के सहारे तैर रहे थे। बकरा मछलियों से कुछ पूछता पर घड़ियालों को देख कर वह सहम गया। वह सोचने लगा कि घड़ियालों से यह सवाल करना ठीक नहीं है। कहीं ऐसा न हो कि वे दुम घुमाकर मारें और उसका काम तमाम हो जाय।
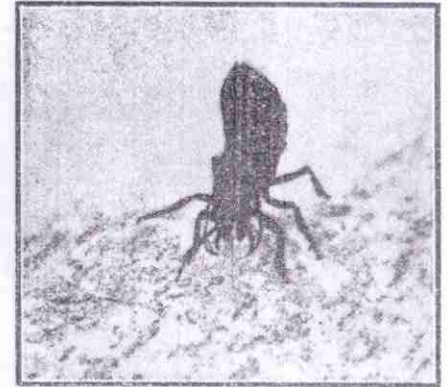
गुबरीले की दुम बन्दूक का काम देती है

वह वहाँ से और आगे बढ़ा। रास्ते में उसकी गुबरीला से भेंट हुई। गुबरीला ने कहा—"मेरी दुम मेरी बन्दूक़ है। जब कोई दुश्मन मुझे खाने आता है तो मैं अपनी दुम उठा लेता हूँ और उससे दुश्मन पर एक तरह के रस की पिचकारी चलाता हूँ। वह रस ज़हरीला और बदबूदार होता है। इससे दुश्मन मेरे खाने का इरादा छोड़कर लौट जाता है।" इसी समय बकरे ने घास पर एक और कीड़े को देखा। इस कीड़े की दुम में दो कीड़े से लगे थे। उनसे वह एक मक्खी को उड़ा रहा था और मुँह फैला कर उसे डरा भी रहा था। जब मक्खी उड़ गई तो कीड़े ने अपना असली रूप धारण कर लिया। यह वैसा ही कीड़ा था जैसा हम हरी घासों पर और पेड़ों की पत्तियों पर अक्सर देखते हैं।

बकरा सोचने लगा कि वह भी अपनी दुम से कोड़े का काम ले सकता तो क्या बात थी ?

उस दिन वह उदास होकर घर वापस लौट आया। रात को एक चूहे से उसकी भेंट हुई। चूहे ने कहा—आदमी समझता है कि बोतल में वह शहद
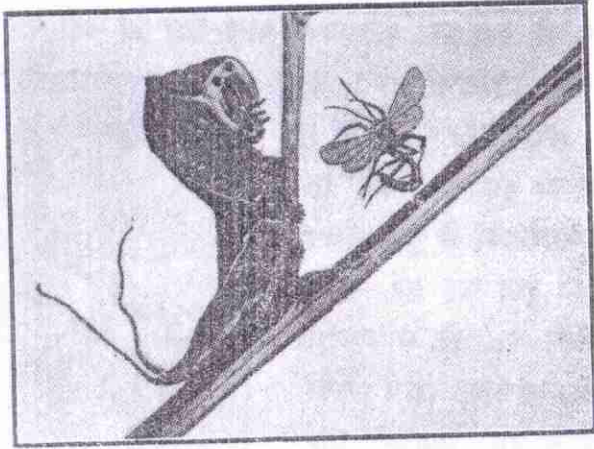
दुम कोड़े का काम दे रही है

वग़ैरह रक्खेगा तो मैं नहीं पा सकूँगा। पर मैं भी बड़ा चालाक हूँ। बोतल में दुम छोड़ कर मैं शहद आदि निकाल लेता हूँ और चाट जाता हूँ।" चूहा अपनी बात ख़तम भी न कर पाया था कि बकरे की एक तरह की छिपकली से भेंट हुई। उसे लोग बामनी भी कहते हैं। उसने कहा—"जब कोई दुश्मन मेरा पीछा करता है तो मैं अपनी दुम का एक टुकड़ा गिरा देती हूँ। वह उसके खाने में लग जाता है तब तक मैं भाग कर अपनी जान बचा लेती हूँ। फिर मेरे नई दुम निकल आती है ?" बकरे ने कहा—"कुछ मुझे भी बताओ, मैं अपनी दुम से क्या काम लूँ।" बामनी ने जवाब दिया—"तुम्हारी दुम की तरह जिसकी छोटी-सी दुम हो वही तुम्हें कुछ बता सकता है।" बकरे की समझ में यह बात

[illegible]गई। वह छोटी दुम के जीवों की तलाश में निकला। अचानक उसकी ख़रगोशों [illegible] भेंट होगई। ख़रगोशों ने कहा—"हमारी दुम छोटी ज़रूर है, पर इससे हम [illegible] काम लेते हैं जो आदमी इशारा करने में झंडियों से लेते हैं। जब ख़तरा [illegible] है तो हम अपनी दुम को इस तरह उठाते हैं कि दुम के नीचे के सफ़ेद

[illegible] दुम की सहायता से बोतल के भीतर [illegible] शहद निकाल कर पी जाता है
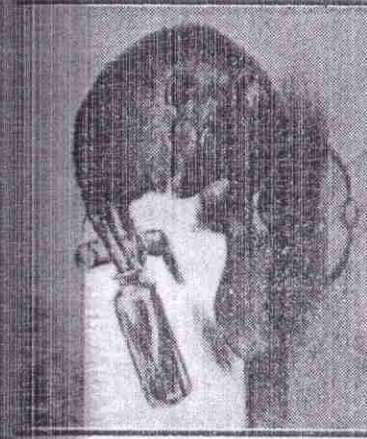
बामनी की दुम घटती-बढ़ती रहती है

[illegible] चमक उठते हैं। इससे हमारे सब साथी चैाकन्ने हो जाते हैं और भाग कर [illegible] में छिप जाते हैं।" बकरे ने कहा—"पर मैं तो यह भी नहीं कर [illegible]।"

अब बकरा बड़े सोच में है। दुनिया में जितने जीव हैं सब अपनी दुमों [illegible] न कुछ काम लेते हैं। केवल वही ऐसा है जो दुम से काम लेना नहीं [illegible]। बालको ! क्या तुम उसे कोई तरकीब बता सकते हो ?

ख़रमस्त

———
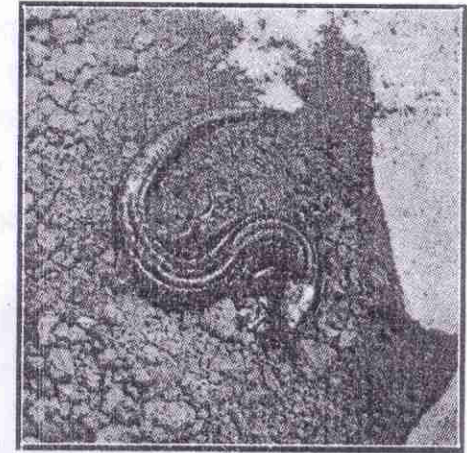
छाता

छाते को छोटा मत जानो
सूर्य छिपा यह देता है ।
मेघों की सारी बौछारें
अपने ऊपर लेता है ॥
अवसर आने पर पशुओं को
भय से दूर भगाता है ।
अपना तनिक सहारा देकर
सरिता पार कराता है ॥
देवों के सिंहासन की भी
शोभा बहुत बढ़ाता है ।
राजा छत्रपती कहलाता
जब वह छत्र तनाता है ॥
लगीं आठ या बारह कड़ियाँ
जिन पर वस्त्र चढ़ा रहता ।
लोहे की या बेंत छड़ी पर
ढाँचा सुगढ़ मढ़ा रहता ॥
धनुष-तुल्य गोलाई इसकी
चोटी रहती सदा खड़ी ।
यह सबकी रक्षा करता है
बन कर टोपी एक बड़ी ॥
फट जाने पर कड़ियाँ इसकी
दरी बुनाई करती हैं ।
टूटी छड़ियाँ भी हाथों में
रक्षा का दम भरती हैं ॥

चन्द्रभानसिंह

———

[लेखक—पंडित श्रीराम वाजपेयी, स्काउट कमिश्नर]

ओंप्रकाश—(याद कर रहा है) कड़ कट्ट=ए; कट्ट कड़=यन; कट्ट कड़ कड़=डी, कड़ कड़ कट्ट=यू; इत्यादि ।

नरेन्द्र—ओम्, आज क्या याद हो रहा है ? क्या अपनी स्काउटिंग का कड़कड़िया पुराण घोट रहे हो ?

ओं०—नहीं भाईजी, कहीं कड़कड़िया पुराण भी होता है । मैं मोर्स याद कर रहा हूँ ।

न०—तुम्हारी स्काउटिंग की बलिहारी ! कभी रस्सी से गाँठ लगा लगा कर पायनियरिंग सीखा करते हो तो कभी पट्टियाँ और खपच्चियाँ बाँध कर ... किया करते हो । तुम्हारे भी अजब अजब स्वाँग हैं। मगर यह मोर्स ... बला है ?

ओं०—बला ! वाह भाईजी ! मोर्स वह चीज़ है जिसे सीख कर स्काउट ... बड़े काम करते हैं । मोर्स सीखे हुए लड़के झंडी, हीलिओ, लैम्प, आग, धुआँ और तार से बीसियों मील के फासिले से आपस में बातचीत कर सकते हैं और नज़दीक से तो बिना मुँह से बोले हुए सीटी, आँख, नाक, जीभ और डमी उसी के इशारे से बात-चीत कर लेते हैं ।

न०—तुम्हारी स्काउटिंग भी कुँजड़िन के बेर हैं। जैसे कुँजड़िन अपने बेर खट्टे नहीं बताती उसी तरह यार तुम भी अपनी स्काउटिंग की छोटी-

सी बात को भी बड़ा बढ़ा कर कहा करते हो। भला तुम कल के पिद्दी लड़के, तुम्हारी क्या औक़ाद जो तुम मीलों से बातचीत कर सको; हाँ फ़ौजी लोगों के बारे में सुनते हैं कि वे इस प्रकार के काम करते हैं।

ओं०—भाईजी, मोर्स में कुछ बड़े शारीरिक बल का काम थोड़ा ही पड़ता है। आपने कभी तार-घर में देखा होगा कि तार-बाबू कुरसी पर बैठे बैठे मेज़ पर लगी डमी को खुटकाते रहते हैं। बताइए उन्हें डमी को खुटकाने में कौन से बड़े मुगदर भाँजने होते हैं। क्या मैं छोटा बालक, अगर उस काम को सीखा हूँ, नहीं कर सकता?

न०—अरे! तो क्या उसी को मोर्स कहते हैं? उसे तो "गर गट्ट" कहते हैं।

ओं०—जी हाँ, वही कड़ कट्ट भी कहलाता है; उसी को टका टर्र, गर गट्ट, अडी अम्पटी, लांग शार्ट इत्यादि कहते हैं।

न०—तुम्हारा मोर्स क्या पूरा विष्णुसहस्र नाम हो गया। मगर यह तो बताओ कि तुम नन्हें नन्हें बालक इसका क्या उपयोग करते होगे?

ओं०—भाईजी, आप तो हरिद्वार-कुम्भ में गये थे। आप तो बड़ी तारीफ़ कर रहे थे कि छोटे छोटे लड़के आइनों के ज़रियों से बीस बीस मील के फ़ासिले से ख़बरें भेज रहे थे जिससे काम में बड़ी आसानी हुई। उसी तरकीब को हीलिओ कहते हैं।

न०—तब तो ओम्, तुम बड़ा अच्छा काम सीख रहे हो। अगर तुम सीख जाओगे तो मैं तुम्हें एक हीलियो ख़रीद दूँगा।

ओम्—थैंक यू! मगर हीलियो का दाम ८० होता है।

न०—अर्र्र्र्र्—अस्सी रुपया! मगर अब तो बात हार गया।

ओं०—हमारे मास्टर नवीनानन्दजी ने मोर्स के सम्बन्ध में एक बड़ी मनोरञ्जक घटना सुनाई थी। क्या आप सुनना पसन्द करेंगे?

न०—मोस्ट सर्टेनली—ज़रूर, ज़रूर!

ओं०—सारे संसार में स्काउटों का, कृष्णजी का बताया हुआ, एक ही सिद्धान्त है "दुष्टों का दमन और धर्म्म की रक्षा कर प्राणी-मात्र को सुख पहुँचाना"। सभी स्काउट इस एक उद्देश्य की पूर्ति में तल्लीन रहा करते हैं। इसके कारण दुराचारी उनसे नाख़ुश रहते हैं।

इसके बताने की भी आवश्यकता नहीं कि स्काउट शिविर-जीवन और वनोपसेवन के बड़े शौकीन होते हैं। कहते हैं कि एक दफ़ा छः स्काउट किसी घने और सूनसान जङ्गल में वनोपसेवन के लिए गये। वहाँ उन्होंने एक तम्बू लगाया और प्रकृति का अध्ययन करने लगे। उन्होंने तम्बू में इधर-उधर से ला ला कर बड़ी बड़ी अनोखी चीज़ें इकट्ठी कीं।

दो दिन के बाद उधर से चार हथियारबन्द डाकुओं का एक गिरोह आ निकला। वे स्काउटों को देख आगबबूला हो गये। और दाँत पीस कर कहने लगे, "बचा आज हत्थे चढ़े हो; तुम लौंडों ने हमारा बीज नाश करना विचारा है; देखो अभी अभी तुम सबको यमलोक पहुँचाते हैं।

मगर स्काउटों का लीडर, हमारे कार्तिक भैया की तरह, बड़ा चतुर था। वह ज़रा भी न घबड़ाया। उसने डाकुओं से निधड़क मगर बड़ी नम्रतापूर्वक बातें कीं और उन्हें अपने तम्बू में इकट्ठा की हुई वस्तुओं को दिखाने ले गया। उसने एक बालटी उठा ली और वह उसके हैंडिल से कुछ "कट कट" शब्द करता जाता और डाकुओं को चीज़ें दिखाता जाता। उसने डाकुओं को अपनी सीटी दिखाई और कहा, "इसकी बड़ी सुरीली आवाज़ है, कहो तो बजाऊँ।" डाकुओं ने कहा, "क्या मुज़ायका"।

सीटी बजते ही लीडर छटक कर तम्बू के बाहर आ खड़ा हुआ और डाकुओं के ऊपर तम्बू "अर-धम्म" करके गिर गया। तम्बू गिरते ही

स्काउटों ने डाकुओं को तम्बू के अन्दर लपेट दिया और उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया।

न०—मैं समझा, यह सब हिकमत लीडर साहब ने अपनी बाल्टी द्वारा साथियों को मोर्स से समझाई थी। मगर यार स्काउट बड़े जुगती होते हैं।

श्रीराम वाजपेयी

लाला गलफुल्लू

कसरत करते नानी मरती, चलते फिरते दादी।
.खूब चकाचक माल उड़ाते, तन पर चढ़ गई बादी॥
बड़े पकौड़े खाते मूली, पाँच सेर की आधी।
खा खा लाला पेट बढ़ाया, धोबी की-सी लादी॥
पैर मुटाए हाथी जैसे, हाथ बनें जस मूसर।
ठुम्मक ठुम्मक लाला चलते, हैं पूरे धमधूसर॥
फूले गाल लटकते थल थल, जस भूलैं फुटबाल।
चार पैग चलते नहीं बनता, आगे कौन हवाल॥
बहली चढ़ गलफुल्लू लाला, शाला भीतर आते।
किलक किलक कर सारे लड़के, मार थपोड़ी हँसते॥

नवीनानन्द

पाँच तुम पाँच हम

पाँच तुम पाँच हम

(१)

बहुत दिनों की बात है एक राक्षस था। उसका नाम चम्पा था। वह एक घने जंगल में रहता था और रोज़ अपने दोस्त लम्पा से मिलने के लिए एक गाँव में होकर जाया करता था।

उसी गाँव में दो लड़के रहते थे। उनका नाम रामू और बलदेव था। उन्होंने चाहा कि चम्पा को अच्छी तरह देखें। सो वे उसे देखने के लिए एक पेड़ के पीछे छिप गये। चम्पा ने जाते वक्त लौट कर देखा तो उसकी नज़र रामू और बलदेव के ऊपर पड़ गई। उन्होंने भागने की कोशिश की परन्तु भाग न सके। चम्पा ने उन्हें उठा कर जेब में रख लिया और कहा—"क्या यह मेरे और लम्पा के लिए अच्छा खाना न होगा?"

चम्पा जल्दी जल्दी घर आया और उसने आग जलाई और एक कढ़ाई में पानी भर कर चढ़ा दिया और जेब से दोनों लड़कों को निकाल कर ज़मीन पर खेलने-कूदने को छोड़ कर लम्पा को बुलाने चला गया।

(२)

रामू और बलदेव में इस तरह बातें होने लगीं।

रामू ने कहा—"हमें कुछ सुनाई पड़ता है"।

बलदेव—"मुझे तो कुछ सुनाई नहीं देता"।

रामू—"देखो फिर आवाज़ आती है अवश्य ही कोई है—कौन है?"

अब दोनों को साफ़ साफ़ यह आवाज़ सुनाई पड़ी।

"मैं तुम्हारा मित्र हूँ आग के और पास आओ"।

लड़कों ने जाकर देखा, एक लाल-बौना खड़ा है। वह बहुत ही छोटा था, उसके हाथ-पैर, मुँह, कपड़े सब लाल थे, आग की ज्वाला उसके कपड़ों से फूटी निकलती थी। उसने दो लाल लड्डू निकाल कर उन्हें दिये और कहा, जब राक्षस तुमको कढ़ाव में डाले तो ये लड्डू अपने मुँह में डाल लेना और धीरे से तीन दफ़ा कहना—"लाल-बौना," यह कह कर लाल-बौना ग़ायब हो गया।

दोनों राक्षस बौने के जाते ही आ पहुँचे। चम्पा ने पहले रामू को कढ़ाव में डाला। रामू जैसे ही गिरा वैसे ही उसने वह लड्डू अपने मुँह में डाल लिया और कहा—"लाल-बौना, लाल-बौना, लाल-बौना" उसके बादही बलदेव भी गिरा। लम्पा चमचे से उन्हें चलाने लगा।

जब दोनों लड़के कढ़ाव में गिरे तब उन्हें एक गुप्त द्वार मिला। उसमें हो कर वे एक बाग़ में पहुँचे। तब रामू ने कहा, "हममें से कोई न भीगा और न जला ही। परन्तु हम पहले से बहुत छोटे हो गये हैं और हम लोग लाल-बौने के बराबर हैं" उसके यह कहते ही लाल-बौना उनके सामने आकर खड़ा हो गया। उसने कहा, "शाबास लड़को, तुमने मेरा कहना माना है इसलिए अब मैं तुमको बचा सकता हूँ, मेरे पीछे आओ"।

यह कह कर लाल-बौने ने एक चाँदी की सीटी निकाल कर तीन दफ़ा बजाई और ज़मीन फट गई। लाल-बौना उसमें कूदा और पीछे लड़के भी कूदे। वह जब नीचे पहुँचे तो फिर एक द्वार मिला। बौने ने तीन दफ़ा सीटी

बजा कर उसे भी खोला। अब उन लोगों ने अपने आपको एक सुरंग में पाया। जब सुरंग ख़तम हुई तो फिर एक दरवाज़ा मिला उसको भी लाल-बौने ने उसी तरह खोला। अब उन्होंने अपने को एक मैदान में पाया। वह चम्पा के मकान के ठीक पिछवाड़े थे और उनकी आवाज़ सुगमता से सुन सकते थे। लाल-बौने ने चम्पा को कहते सुना।

चम्पा—"वे बदमाश निकल गये"।

लम्पा—"मेरे ख़याल में लाल-बौने ने उनकी मदद की होगी"।

चम्पा—"मैं उनको ढूँढ़ने जाता हूँ"।

लम्पा—"चलो"।

लाल-बौने ने लड़कों से कहा, "भागो भागो वे हमें ढूँढ़ने आते हैं" और वह लड़कों को लिये हुए भागा। दोनों देव उनके पीछे भागे आते थे। लाल-बौना एक हरे पेड़ के पास पहुँचा और सीटी बजाई तो पेड़ की छाल खसक कर दरवाज़ा बन गया। बौना और लड़के उसमें घुस गये। अपने आपको एक कमरे में पाकर वह प्रसन्न हुए। लड़के थक गये थे सो वे जाकर सो गये। राक्षस उस पेड़ के पास आये और लम्पा ने कहा—"बदमाश इसी में हैं, मुझे उनकी बू आती है।

चम्पा को नींद आ रही थी इसलिए सोचा कि पेड़ तीसरे पहर काटा जाय। वे दोनों उस पेड़ के नीचे सो गये।

अब बौने ने फिर सीटी बजाई। ज़मीन फट गई और एक हरी मेज़ ऊपर आई। उस पर एक से एक बढ़िया खाने की चीज़ें हरे बर्तनों में रक्खी हुई थीं। बौने ने लड़कों को जगाया और खाना खिलाया और मेज़ पर बैठ गये। मेज़ उनको लेकर नीचे उतर गई। उन्होंने सुना कि लम्पा और चम्पा जो पेड़ चीर कर उसमें आ गये थे रामू और बलदेव के न मिलने पर बड़बड़ा रहे हैं"।

इस मर्तबा फिर लाल-बौने ने सीटी बजाई और एक हरी गाड़ी, जिसमें छः हरे घोड़े जुते हुए थे और एक हरा बौना साईस बना हुआ था, आकर खड़ी हो गई। लाल-बौने ने उनसे कहा, "लड़को यह मेरा छोटा भाई हरा-बौना है। यह तुमको घर पहुँचा देगा मगर पीछे फिर कर मत देखना। तुम किसी दिन मुझे फिर देखोगे। यह कह कर उसने उन्हें दो सफ़ेद लड्डू दिये जिनके खाने से अपनी असली हालत पर आ गये। वे लड़के अब बुड्ढे हो गये हैं पर उन्हें अभी तक लाल-बौना फिर दिखाई नहीं दिया। उन्हें अभी तक उम्मीद है कि वे उसे कभी देखेंगे।

सतगुरुशरण श्रीवास्तव

———

वरदान

दीजिए हे भगवन ! वरदान।
सेवा-व्रत को सदा निबाहें है यह जब तक प्रान।
जगे ज्ञान का दीपक दिल में मिटे सभी अज्ञान॥
बेटे हैं हम भारत मा के रक्खें उसका मान।
हँस हँस कर स्वदेश-वेदी पर हो जावें बलिदान॥

दुर्गाप्रसाद नन्दे "मुकुल"

———

कौआ

कौआ हर घर में आता है,
जो मिलता है खा जाता है।
बहुत बुरी है बोली इसकी,
नफ़रत करता है जिससे जी।

काला भी नापाक भी है यह,
चोर भी है चालाक भी है यह।
एक बच्चा रोटी का टुकड़ा,
अपनी मा से लेकर आया।

ख़ुश ख़ुश वह टुकड़ा खाता है,
आपही आप हँसता जाता है।
बैठा था कहीं छिप कर कौआ,
उसने इस टुकड़े को पाया।
चुप चाप उड़ कर पीछे आया,
चुपके चुपके क़दम बढ़ाया।
देखो तो अब उसकी ढिठाई,
वह उचका वह चोंच बढ़ाई।
छीना टुकड़ा यह जा वह जा,
उसका कौन करे अब पीछा।
बच्चा रोया अम्माँ कहके,
गाल पै आँसू आये बह के।

श्याममोहनलाल 'जिगर' बी० ए०

ऊँ ऊँ और भों भों
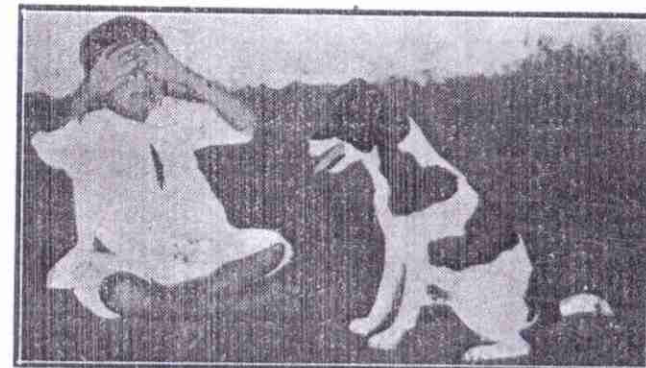
ऊँ ऊँ ऊँ औ भों भों भों।
साथी हों तो ऐसे हों॥

चन्द्रमा में ग्रहण क्यों लगता है ?

आज चन्द्रग्रहण है। मोहन और कमला दोनों भाई-बहन बैठे इधर-उधर की गप लड़ा रहे थे कि इतने में पं० ज्ञानचन्द्रजी आ पहुँचे। कुछ देर इधर-उधर की बात-चीत होती रही। फिर मोहन बोल उठा—अच्छा पण्डितजी यह तो बतलाइए कि चन्द्रग्रहण क्यों होता है ?

कमला—क्या भैया तुम नहीं जानते कि राहु और केतु जब चाँद को ग्रसने को दौड़ते हैं तो वह अपना मांस काट काट कर फेंकते हैं।

मोहन—नहीं कमला हमने यह नहीं सुना। तुम हमें इसका पूरा हाल सुनाओ।

कमला—एक बार, जब देवताओं ने समुद्र मथा तो उसमें से एक अमृत-कलश निकला। तब सब देवता पंगत लगा कर अमृत पीने बैठे।

इन देवताओं की पंगत में राहु-केतु भी अमृत पीने की इच्छा से जाकर बैठ गये। सूर्य और चाँद ने इनको देख लिया और सब देवताओं से कह दिया कि यहाँ पर दो राक्षस भी बैठे हैं। यह सुनकर विष्णु भगवान ने अपना चक्र चलाया और उनका सिर धड़ से अलग होगया परन्तु वे मरे नहीं क्योंकि अमृत उनके गले तक पहुँच गया था। सो अब वे अपनी उसी पुरानी शत्रुता को याद करके कभी कभी इन पर हमला करते हैं। शायद आज यह चाँद के पीछे पड़े हैं ?"

पंडितजी—अच्छा कमला तुमने यह किससे सुना ?

कमला—दादी ने एक दिन रात को सुनाया था।

पंडितजी—अब जो मैं कहता हूँ उसे सुनो।

तुम यह तो जानते ही होगे कि पृथ्वी सूरज के चारों तरफ़ घूमती है और चाँद पृथ्वी के चारों ओर घूमता है।

मोहन—हाँ यह बात तो मास्टर साहब ने मुझे स्कूल में बताई है।

पंडितजी—"और शायद यह भी जानते होगे कि सूरज से पृथ्वी के केवल आधे ही हिस्से में दिन रहता है और यह कि चाँद में अपनी रोशनी नहीं होती। जब सूरज की रोशनी चाँद पर पड़ती है तो वह उसे हमारे पास भेज देता है। अच्छा तो अब एक काग़ज़ पेंसिल लाओ तो मैं अब तुम्हें एक चित्र-द्वारा यह बात समझा दूँ।

मोहन—काग़ज़ पेंसिल ले आया। पंडितजी ने काग़ज़ पर एक एक गोला बना कर कहा—"मान लो कि यह सूरज है। फिर दूसरा छोटा गोला बना कर कहा—और यह पृथ्वी है।" फिर चाँद की शकलें बनाकर कहा—"यह चाँद पृथ्वी के चारों ओर घूम रहा है।"

मोहन—आपने तीन चाँद क्यों बनाये ?

पंडितजी—यह तीन नहीं एक ही है। तुम्हें उसकी गति दिखाने को तीन बना दिये थे। अब सूरज की किरणें और पृथ्वी की छाया बना कर देखो। जब चाँद नं० एक पर था तब वह सूरज की रोशनी पाता था और चमकता था। जब नं० २ पर पहुँचा तो क्योंकि पृथ्वी उसके और सूरज के बीच में आ गई इस कारण अब वह नहीं चमकता और दिखाई भी नहीं देता। इसी को हम चन्द्रग्रहण कहते हैं। तीन पर पहुँचेगा तो फिर चमकने लगेगा। तब तुम कहोगे अब ग्रहण छूट गया। इसी तरह पृथ्वी और सूरज के बीच में चाँद के आ जाने से सूर्य-ग्रहण पड़ता है।

———

चन्द्रप्रकाश
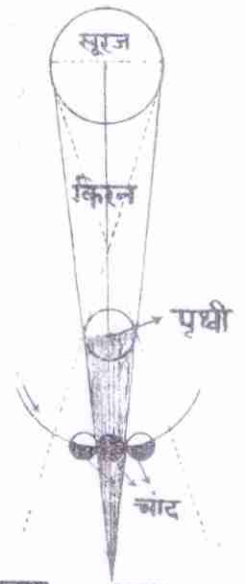
मेरा कुत्ता

मेरा भोला-भाला कुत्ता।
श्वेत-श्याम रँगवाला कुत्ता।
ऐसा सुन्दर बच्चा कौन ?
जग में सेवक सच्चा कौन ?
मेरा कुत्ता, मेरा कुत्ता ।

घूम घाम जब मैं घर आता।
दरवाज़े पर पूँछ हिलाता।
बेहद प्रेम दिखाता कौन ?
सबसे मुझको भाता कौन ?
मेरा कुत्ता, मेरा कुत्ता ।

थक कर जब मैं हूँ सो जाता।
बेसुध होकर नाक बजाता ॥
तब है पहरा देता कौन।
ख़बर खलों की लेता कौन ?
मेरा कुत्ता, मेरा कुत्ता ।

बाहर मेरे सँग जब जाता।
आगे चल कर मार्ग बताता।
ग़ायब चीज़ें पाता कौन ?
घर वापस ले आता कौन ?
मेरा कुत्ता, मेरा कुत्ता।

दिन भर मेरा दिल बहलाता।
गेंद उठा कर मुँह में लाता।
साथी मेरा प्यारा कौन ?
तीन लोक से न्यारा कौन ?
मेरा कुत्ता, मेरा कुत्ता ।

ऊपर जिसका छापा चित्र।
वह है सच्चा सेवक मित्र।
इसी लिए यह भाता मुझको।
सबसे अधिक सुहाता मुझको।
मेरा कुत्ता, मेरा कुत्ता !

हीरा जोशी

किधर सिर है किधर दुम ?

इस संसार में बहुत से अजीब जीव हैं। कुछ तो आदमी को बिलकुल धोखे में डालनेवाले होते हैं। इस जीव की शकल-सूरत को देख कर आप यही कहेंगे कि यह साँप है। किन्तु यह साँप नहीं, बल्कि एक तरह की छिपकली है। अगर तुम ध्यान देकर इसकी पीठ की तरफ़ देखो तो तुमको छिपकलियों के पैर के समान पैरों के चिह्न दिखाई पड़ेंगे। इसकी विशेषता इस धोका देनेवाली सूरत में नहीं किन्तु इस बात में है कि इसके सिर और दुम की पहचान करना बहुत ही कठिन है।
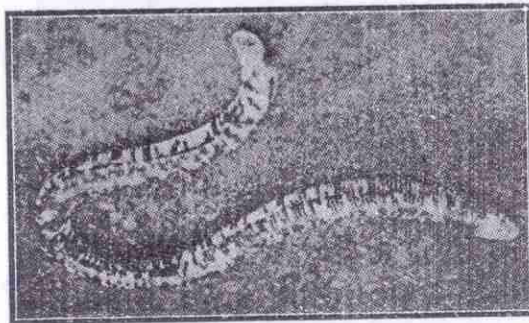
कौन सिर है कौन दुम ?

यह जानवर इंजन की तरह किसी भी तरफ़ से अच्छी तरह चल फिर सकता है— चाहे पहले सिर की तरफ़ से चले चाहे दुम की तरफ़ से। इसका चमड़ा धब्बेदार है इससे हम कह सकते हैं यह ज़हरीला है। क्योंकि अधिकतर विषैले जानवरों के चमड़े धब्बेदार हुआ करते हैं। पहले साँप के भी पैर हुआ करते थे पर घिसते घिसते वे घिस गये। बिना पैरों की छिपकलियों और साँपों में यही फ़रक है कि छिपकली अपनी पलकों को घुमा-फिरा सकती है पर साँप नहीं।

रामनरेश मिश्र, एम० ए०

चार वर्ष पहले

बात पुरानी है। बहुत पुरानी नहीं तो चार वर्ष तो ज़रूर हुए होंगे। इतने समय में न मालूम कितना हेर-फेर हो गया। इस चित्र में दी गई मूर्तियों में से अब बहुत कम तसवीरें वहाँ रह गई हैं। किन्हीं ने पढ़ना छोड़ दिया है। कोई कालेजों में पढ़ रहे हैं, कोई उसी स्कूल में मास्टर हैं। तीन लड़के इनमें ऐसे भी हैं जो केवल अपनी यादगार छोड़ कर घरवालों, मास्टरों और साथ के पढ़नेवालों को रुला कर हमेशा के लिए संसार से चले गये हैं। हाँ, एक बात तो और बतला दूँ, यह चित्र श्रीगांधी राष्ट्रीय विद्यालय फ़र्रुख़ाबाद के विद्यार्थियों का है। इनमें जो एक डाढ़ी मूँछवाले बैठे हैं उन्हें विद्यार्थी मत समझ लेना। वे एक बड़े मसख़रे, बच्चों से प्रेम करनेवाले, अपने को बच्चा कहनेवाले मौ० महमूदअली ख़ाँ हैं, बड़े हँसमुख हैं, देखो न, तसवीर में भी मुसकुरा रहे हैं। उस समय ये फ़र्रुख़ाबाद म्यूनिसपैल्टी के चेयरमैन थे। इस समय डा० अन्सारी के ख़ास मंत्री (सिकत्तर) हैं। एक लड़का भी इनमें बड़ा मसख़रा है। उसकी तसवीर देखो, खड़ा है, ठोड़ी नीचे को दबा ली है, आँखें फाड़ दी हैं, घूर रहा है, तसवीर साफ़ नहीं आई है। मानो तसवीर में भी देखनेवालों से मसख़री कर रहा है। इनमें और भी बहुत से अजीब अजीब ढंग के लड़के हैं। एक साहब तो इतने पतङ्गबाज़ थे कि एक रोज़ छत पर से गिर पड़े और एक टाँग तोड़ ली। एक और साहब को देखिए कोट पैजामा पहने, आँख मुँह फुलाये हाथ पर हाथ रक्खे डटे हैं, कैसे विचित्र मालूम होते हैं ? डाढ़ी मूँछवाले लड़के के पास देखिए एक लड़के ने कैसा मुँह बना लिया है मालूम होता है इसको आपको चिढ़ा रहा है। एक लड़का तो ऐसा मुँह चुनिया रहा है मानो कि चिपट गई हो। हाँ, ज़रा एक लड़के को और देख लीजिए। हैं तो विद्यार्थी लेकिन बेंत हाथ में लेकर खड़े हुए हैं। मानो मास्टरी कर रहे हैं। इनको

लोग कहते हैं बटुकनाथ। एक साहब के हैं तो दोनों आँखें पर एक आँख की पुतली चढ़ा कर न मालूम कहाँ ले गये, एक ही आँख से सबको देख रहे हैं।

अच्छा सुनो। इनमें एक से एक हँसोड़, उपद्रवी, मसखरे लड़के थे पर थे सब प्रायः बुद्धिमान् और पढ़ने में भी अच्छे। मेल तो आपस में इतना था कि कुछ न पूछो एक दूसरे की शिकायत बहुत कम करते थे। ज़रूरत पड़ने पर आपस में चीज़ें दे ले लेते थे। तारीफ़ यह कि हिन्दू, मुसलमान सभी के लड़के पढ़ते थे। कभी कोई किसी को बुरा न समझता था। जब कभी शहर में राष्ट्रीय झंडा घुमाया जाता था तो सब लड़के बड़े उत्साह से खद्दर के कपड़े पहन कर एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए भजन गाते, शोर मचाते निकलते थे। अछूतों तक को पढ़ने की मनाही न थी। चित्र में ही देखो, दो एक लड़कों का पता लग जायगा जो अछूत हैं। कभी कभी मिठाई आदि बँटती तो सब एक साथ बैठ कर बड़े मज़े से हँसते हुए खाते थे। सबको यही सिखाया जाता था "कि तुम सब भाई हो, भारत माता तुम्हारी माता है" फिर कहो मेल क्यों न होता। एक मास्टर थे पं० सूर्य सहाय दीक्षित, लड़कों का उनसे बेहद प्रेम था। जानते हो क्यों ? वे उन्हें सिर्फ़ बड़ी मेहनत और मुहब्बत से पढ़ाते ही न थे, खेल खिलाने भी ले जाया करते थे। शहर के सब लोग विद्यालय की तारीफ़ करते थे। हेड मास्टर बा० तेजसिंहजी बड़े सज्जन, लायक़ और जी-जान से विद्यालय की तरक़्क़ी चाहनेवाले आदमी थे। इस समय भी वही हेड मास्टर हैं और कम दर्जे रह जाने पर भी उसे एक आदर्श स्कूल बनाये हुए हैं।

एक बार इस चित्र में फिर देखिए एक लड़के पर नम्बर १ पड़ा हुआ है इसका नाम था लक्ष्मीनारायण, बड़े सीधे स्वभाव का हँसमुख, मिलनसार और तेज़ बुद्धिवाला लड़का था। १५ वर्ष की उम्र थी, अभी ९ वाँ दर्जा पास किया था। संस्कृत, हिंदी में पहला नम्बर रहता था। उसने आर्यसमाज के जलसों पर दो एक बार व्याख्यान भी दिये थे। दुःख है कि गत १२ अगस्त को अपने मा-बाप
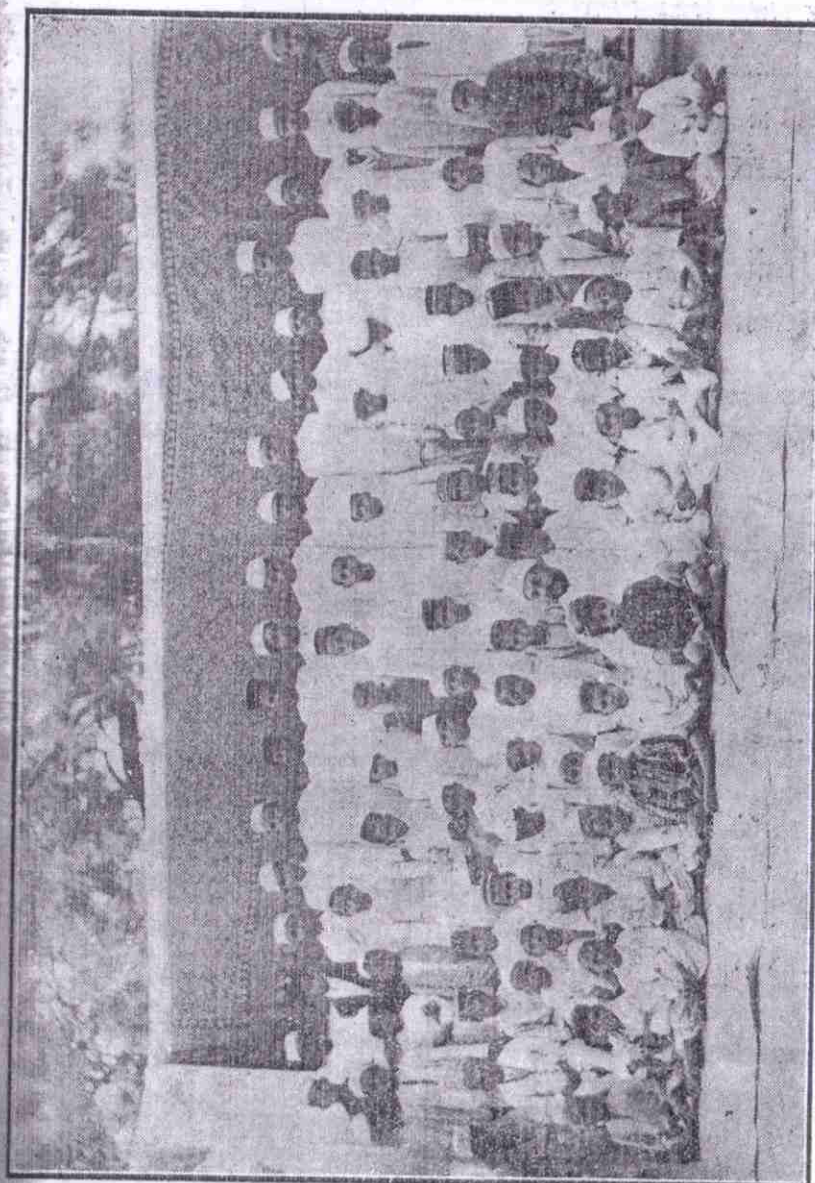
श्री गांधी राष्ट्रीय विद्यालय, फ़र्रुख़ाबाद

को दुःख-सागर में छोड़ कर स्वर्ग चला गया। सब विद्यार्थी उससे बहुत मेल रखते थे क्योंकि वह अक्सर उन्हें कापी, पेंसल, किताबें दे दिया करता था। ग़रीब लड़कों को पैसे भी दे देता था। लड़ाई तो उससे किसी से होती ही न थी। सबसे हँसकर ही बोलता था। इक्के और साइकिल की सवारी का बहुत शौक था। ऐसे भले और सच्चरित लड़के के न रहने से किसे दुःख न होगा।

क्यों, कितनी अच्छी बात हो, अगर सब जगह स्कूलों में ऐसे ही अच्छे लड़के, ऐसे ही अच्छे मास्टर और हेड मास्टर हों।

विद्याभास्कर शुक्ल

प्रातःकाल

रमेश—

फूलों पर जो पड़े हुए हैं, किसने मोती डाले हैं ?
हरे फ़र्श को धोया है क्या, कोई आनेवाले हैं ?

शारदा—

प्रकृति नित्य ही बाल-सूर्य का, स्वागत करने आती है।
धोकर फ़र्श ओस से प्रतिदिन, शीतल वायु बहाती है॥
फूलों को सुगन्ध से भर कर, प्रात समय महकाती है।
पत्तों के दोनों में मोती, उसकी भेंट चढ़ाती है॥

देवीप्रसाद गुप्त (कुसुमाकर)
बी० ए०, एल-एल० बी०

मुन्नी

(१)

मेरी मुन्नी बड़ी दुलारी।
मुझको है वह जी से प्यारी॥
सुनकर अपनी सदा बड़ाई।
लेने लगती वह अँगड़ाई॥

(२)

जो जो कहती सब कर लाती।
कभी धता वह नहीं बताती॥
भोली भाली आज्ञाकारी।
मेरी मुन्नी मुझको प्यारी॥

(३)

साथ दिये कामों में रहती।
घर का सब कुछ श्रम से करती॥

कभी नहीं मुन्नी अनखाती।
बात बात में सदा लजाती॥

(४)

प्यारी मुन्नी मेरी रानी।
उसकी है फिर मीठी बानी॥
उसको बहुत सफ़ाई रुचती॥
मैया मैया कहती रहती।

मुन्नी की मा

रूस की लड़कियाँ

रूस की लड़कियाँ बड़ी बहादुर होती हैं। वे लड़कों के साथ पढ़ती हैं, खेलती हैं और सब बात में लड़कों की बराबरी करती हैं। फ़ौज में भर्ती होती हैं और बन्दूक़ लेकर दुश्मन से लड़ने जाती हैं।

पर इससे यह न समझना चाहिए कि वे बिलकुल ही लड़कों की तरह रहती हैं। वे अपने घर का काम करती हैं, गुड़ियाँ खेलती हैं, मा की सहायता करती हैं। उन्हें अपनी जातीय पोशाक बहुत पसन्द है। कुछ दिन हुए रूस की राजधानी पेट्रोग्रेड में जातीय पोशाक की नुमाइश हुई थी। रूस बड़ा भारी दूर तक फैला हुआ देश है। पर इस नुमाइश में बहुत दूर दूर से रूसी लड़कियाँ शामिल होने आई थीं। आगे के चित्र में जितनी लड़कियाँ खड़ी हैं इन सबको अच्छी जातीय पोशाक पहनने के लिए पहले दर्जे का इनाम मिला है। चित्र देखने से तुम्हें जान पड़ेगा कि इन लड़कियों को गहने और कपड़े का शौक़ बहुत है। पर ये हमेशा गहने नहीं पहनतीं। कभी कभी पहनती हैं। अपना ज़्यादा समय ये पढ़ने-लिखने में, कारीगरी सीखने में और दूसरे कामों में लगाती हैं।

रूस में बरफ़ बहुत पड़ती है। कई महीने अधिकांश देश सफ़ेद चाँदी की चादर से ढका दिखाई देता है। इसके बाद जब वसन्त-ऋतु आती है और

रूस की गुड़ियाँ

बरफ़ पिघलती है तो खेती का काम शुरू होता है। लड़कियाँ खेती के काम में बराबर अपने मा-बाप की मदद करती हैं और जब अनाज पक जाता है तो उसे काटने जाती हैं। खेतों में वे ख़ुशी ख़ुशी गाती हैं और काम करती हैं।

बड़ी होने पर वे अपना ब्याह करती हैं। अब यह क़ायदा हो गया है कि वे जिसके साथ चाहें अपना ब्याह करें। कोई रोक टोक नहीं। पर पहले

एक अजीब क़ायदा था। यह क़ायदा कहीं कहीं अब भी पाया जाता है।

रूस की लड़कियाँ जातीय पोशाक पसन्द करती हैं

१९ जनवरी को विवाह के योग्य लड़कों के नाम मोटे काग़ज़ के टुकड़ों पर लिखे जाते हैं। ये टुकड़े लकड़ी के बड़े बर्तनों या टबों में छोड़ दिये जाते हैं। उनमें से गेहूँ का चोकर भर दिया जाता है और लड़कियाँ नुकीले डण्डों से इन टुकड़ों को नाथती हैं। जिस लड़की के डण्डे में जिस लड़के का नाम आता है उसी के साथ उसका विवाह होता है।

वर की खोज हो रही है

लड़कियों का अधिक जीवन गाँव में ही बीता है। रूस प्रायः किसानों का देश है। और रूस की

लड़की को किसान के घर में जन्म लेने का और मोटा काम करने का बड़ा घमण्ड होता है। क्या अच्छा हो कि हमारे देश की लड़कियाँ भी छोटा-मोटा काम जो सामने आवे उसे करने में शरम न करें। पढ़ने-लिखने में भी ध्यान दें। हमेशा गहनों के ही पीछे न पड़ी रहें।

जयदेवी

रूसी लड़कियाँ खेतों में बड़ी ख़ुशी से काम करती हैं
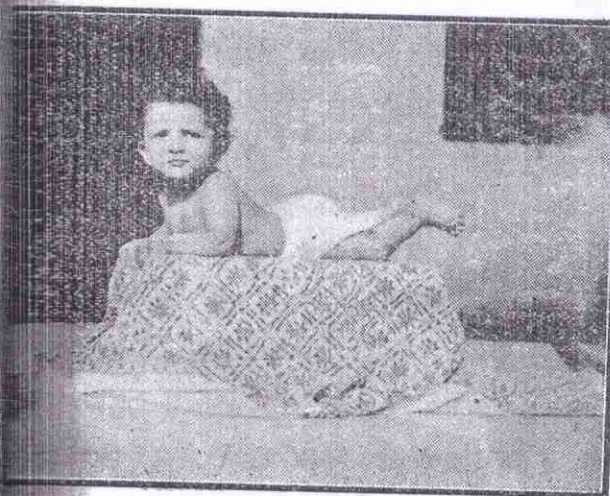
बाल-परिचय

गाना इसे बहुत है भाता।
मगर बैठना अभी न आता॥

(ईरा—आयु पाँच मास; विश्वभारती के इँगलिश प्रोफ़ेसर श्रीयुत जे० जे० वकील की पुत्री)

(१)

एक समय एक आदमी ने एक राहगीर से पूछा—"भाई! यह सड़क कहाँ जाती है?"

राहगीर था मसख़रा। उसने कहा—"देखते नहीं हो, सड़क तो यहीं पड़ी है, जाती कहाँ है।"

(२)

एक जज साहब एक अपराधी को फाँसी की सज़ा देनेवाले थे। इतने में ही उनके एक दोस्त उनसे मिलने आये। जज साहब तुरन्त ताड़ गये कि वे अपराधी की सिफ़ारिश करने आये हैं। उनके बैठते ही जज साहब ने कहा—"ख़बरदार, उस अपराधी के बारे में तुम कुछ भी मत कहना, मैं इस बारे में तुम्हारी बात बिलकुल नहीं मानूँगा।"

मित्र—"मैं तो कहता हूँ कि, आप उसे ज़रूर फाँसी दें।" जज साहब प्रतिज्ञा में बँध चुके थे इसलिए उन्हें उस अपराधी को छोड़ना पड़ा।

(३)

राम—"श्याम! मनुष्य खाते क्यों हैं?"

श्याम—"यह सवाल किसी मूर्ख से पूछो।"

राम—तभी तो तुमसे पूछता हूँ।

(४)

एक समय एक वकील बड़ी जल्दी में जा रहे थे, इतने में उन्हें एक आदमी ने ५) का नोट दिखाया और पूछा—"वकील साहबजी! क्या यह नोट ठीक है?" वकील ने नोट जेब में रखते हुए कहा—"मेरी फ़ीस ४) है। आप १) हमारे घर से मँगवा लीजिएगा"।

(५)

रसोइए ने कहा—"रसोई-घर में दिन-रात बैठा रहता हूँ पर बदले में क्या पाता हूँ? कुछ नहीं।"

मालिक ने जवाब दिया—"तुम भाग्यवान् हो, मुझे तो कभी पेट का दर्द मिलता है और कभी बदहज़मी।"

विष्णुदयाल, अग्रवाल

ख़रगोश की चतुराई

एक समय लगातार साल भर पानी की एक बूँद भी न गिरी। दिन में गर्मी के कारण लोगों की आफ़त होती ही थी, उस पर पानी का न मिलना। सैकड़ों की तादाद में लोग मरने लगे। पेड़, फूल, फल सब कुम्हला गये। एक जंगल में कुछ ख़रगोश रहते थे, उन्हें पानी से मुँहताज न होना पड़ा। वे एक छोटे से झरने के किनारे रहते थे।

शाम हो रही थी; कुछ हाथी अपने मुखिया से बोले—अगर जल्दी पानी न खोजा जायगा तो हम लोगों का बचना बहुत मुश्किल है। अपने साथियों की इस दशा से उसे बड़ा रंज हुआ। वह एक जंगल की ओर पानी की तलाश में चला। अन्त में उसे वही झरना मिला, जिसका पानी पीकर ख़रगोश अभी तक ज़िन्दा थे। अब तो हाथियों की बन आई। सब ख़ुशी ख़ुशी झरने में नहाने लगे और पानी पीने लगे।

हाथियों का तो भला हुआ, पर ख़रगोशों की मौत आई। वे बेचारे पानी के बिना तलमला गये। हाथियों ने सब पानी गन्दा कर दिया था। ख़रगोश इस डर से झरने के किनारे से भी भाग गये थे कि कहीं हाथी के पैरों के तले न दब मरें।

एक दिन सब ख़रगोश मिलकर अपने अगुआ के पास गये और रोती-सी आवाज़ में बोले—अब हम लोगों की मौत आ गई, पानी बिना हम लोग बचने के नहीं। अगुआ ख़रगोश बड़ा चतुर था। वह झरने के पास के टीले पर दौड़ा गया और बोला—"अरे हाथियो! हम लोगों की रक्षा चन्द्रमा करता है, यदि तुम हमें दुःख पहुँचाओगे तो चन्द्रमा तुमसे नाराज़ हो जायगा। वह देखो, झरने की लहरों में ग़ुस्से से काँप रहा है। नहीं मालूम वह तुम्हें क्या सज़ा देगा।"

हाथियों ने देखा कि सचमुच चन्द्रमा ग़ुस्से से काँप रहा है। हाथियों के अगुआ ने कहा—चलो, यहाँ से भाग चलो, चन्द्रमा हमसे नाराज़ हो गया है। हे चन्द्र-देव, क़ुसूर माफ़ करना।

सब हाथी भाग गये। ख़रगोश फिर आनन्द से दिन बिताने लगे। चैन की बंशी बजाने लगे।

चतुराई से कठिन काम भी सहज हो जाते हैं।

गौरीशङ्कर 'लहरी'

———

१—पिल्ला, बिल्ला और चिबिल्ला

बालको! पिल्ला, बिल्ला और चिबिल्ला के बारे में तुमने गत अङ्क में पढ़ा होगा। और शायद तुम यह भी जानते हो कि पिल्ला का मुँह कुत्ते से मिलता जुलता था, बिल्ला का बिल्ली से और चिबिल्ला तो मानों साक्षात बन्दर था। इन तीनों लड़कों को जो देखता उसे ही हँसी आ जाती थी। तीनों साथ साथ रहते थे और एक न एक शरारत करते ही रहते थे। यहाँ उनके बारे में एक और मज़े की बात लिखी जाती है।

तीनों को 'त' और "ट" का फरक नहीं मालूम था। वे "त" को "ट" और "ट" को "त" कह देते थे। एक दिन मास्टर ने उनका यह ऐब दूर करने का यत्न किया और कहा—"कहो 'तब'।" पिल्ला ने कहा—'टब' मास्टर ने बिगड़ कर कहा—"बेवक़ूफ़ 'टब' में पानी भरा जाता है। पिल्ला ने जवाब दिया—"पर मैं वह 'टब' कहता हूँ जिसमें पानी नहीं भरा जाता।" पिल्ला को छोड़कर मास्टर ने बिल्ला से कहा—"कहो, "लाट साहब।" बिल्ला—"लात साहब।" मास्टर ने कहा—"बेवक़ूफ़, लात पैर को कहते हैं।" इसी बीच में चिबिल्ला बोल उठा—"जी हाँ मास्टर साहब, आप भी तो उस दिन पै को 'लाट' कहते थे।"

मास्टर साहब को उस रोज़ इतना ग़ुस्सा आया कि उन्होंने अपना ही सिर पीट डाला।

———

२—बन्द पारसल

पोस्टमैन पारसल ले आया—
क्या है ?—कुछ न मुझे बतलाया।
खोला तो थीं रंग-बिरंगी—
उसमें सेब और नारंगी।
इसको खाऊँ, किसको खाऊँ—
चक्कर में हूँ, क्या बतलाऊँ ?

शम्भूदयाल सक्सेना, साहित्य-रत्न

३—नारियल का मेला

बम्बई में हर साल नारियल का मेला होता है। उसमें लाखों नारियल तोड़ कर समुद्र में फेंके जाते हैं। ऐसे मौक़ों पर नारियल बेचने वालों की बन आती है। जहाँ देखो वहीं वे बहँगों में नारियल लिये दिखाई पड़ते हैं।

---
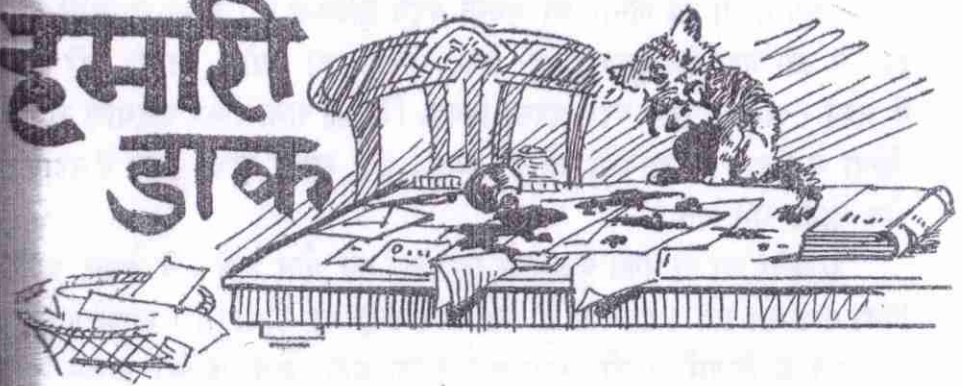
(१)

प्रिय सम्पादकजी,

बाल-सखा कल मिला। इनामी पहेली का उत्तर चकी है। लेकिन बाल-सखा देर में आया। अगर आपको दस साल की उमरवाली शर्त रखनी थी तो बाल-सखा भी सितम्बर में भेजते। अब आपकी भूल से मैं इनाम नहीं ले सकूँगा। मेरी उम्र १४ अक्टूबर को दस साल की होगई और बाल-सखा मिला उसके बाद।

आपका—प्रेमसिंह भगत
'अलाहबाद'

"प्रिय प्रेमसिंह, आपकी आयु सितम्बर में दस वर्ष थी और प्रश्न सितम्बर में छपा था इसलिए आपके उत्तर पर भी विचार किया जायगा। पर यह तो बतलाइए कि यह 'अलाहबाद' क्या बला है ?"

(२)

महाशय जी,

................(यहाँ हमें बहुत कड़ी कड़ी बातें लिखी हैं इसलिए छोड़ दिया है—सं०)

सम्पादकजी—आप हमेशा बालकों को लथेड़ा करते हैं कि लिखावट ख़राब है। पर ज़रा आप ख़ुद को तो कहिए ? आपकी चिट्ठियाँ आती हैं तो पढ़ते-पढ़ते दिन डूब जाता है।

आपका गिरीशकुमार वर्मा
बिलासपुर

"प्रिय गिरीशकुमार वर्मा, शायद हमारी चिट्ठियाँ लम्बी होती हैं। लम्बी चिट्ठी पढ़ने में देर लगेगी ही। अच्छा अब छोटी चिट्ठियाँ लिखा करेंगे।"

(३)

एक महाशय जान बूझ कर तुतला रहे हैं और ग़लत चिट्ठी लिख रहे हैं। देखिए न !

"हमारे छुभचिंतक दोस्त छंपाडक जी कहो। मालूम होवे की हमारे पुजवर पंदी जी हमाले लिए बालछका बुलवाते है। परने में बला मजा आता हे। अब के हमने पहेली का उटर लिखकर भजा है। हमको बली खुसी होती है हमको जल्दी ईनाम भेजो।

द: मनोहरलाल विद्यार्थी।"

———

१—लटका है चमगादड़ नाहीं। पेट बड़ा पर खाता नाहीं।
पंख बड़े पर पक्षी नाहीं। फिरे धनी के नित घर माहीं॥

श्रीशचन्द्र पोद्दार, कलकत्ता

२—कल बनता धड़ के बिना, मल बनता सिर हीन।
पैर कटे से कम बनूँ, अक्षर केवल तीन॥

प्रेमदुलारे, आज़मगढ़

३—मैं चार अक्षरों का हिन्दुस्तान का एक मशहूर शहर हूँ। जब दूसरे और तीसरे अक्षर मिल जाते हैं तो एक बे पूँछ का जानवर बन जाता हूँ। जब तीसरे और चौथे अक्षर मिल जाते हैं तो ईख से निकलनेवाली चीज़ बन जाता हूँ। बताओ मैं कौन शहर हूँ।

हरिश्चन्द्र राय, दारागंज

४—आज रात को (जिस दिन यह प्रश्न पढ़ो उसी रात को) तुम जो सपना देखो उसे दूसरे दिन उठते ही लिखकर भेजो। बनावटी सपना मत लिखना। यदि कुछ न दिखाई पड़े तो उत्तर देना कि कुछ नहीं देखा।

नोट १—जिनके चारों जवाब ठीक होंगे उनमें प्रथम दो को इनाम मिलेगा।
२—जिनके तीन जवाब तक ठीक होंगे उनका नाम छापा जायगा।
३—जिनकी लिखावट साफ़ नहीं होगी उनका नाम नहीं छापा जायगा, न इनाम ही मिलेगा।
४—जवाब भेजने का पता—सम्पादक 'बाल-सखा', इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद।

सितम्बर सन् १८२८ की पहेलियों के उत्तर

१—चक्की

इस पहेली के जितने उत्तर आये थे वे सब श्रीयुत श्रीशचन्द्र पोद्दार के पास भेज दिये गये हैं। अभी उन्होंने निर्णय करके नहीं भेजा। पाठक आगामी अङ्क प्रकाशित होने तक धैर्य्य धारण करें।

२—(क) घड़ी (ख) पिक (ग) रेल (घ) चाबुक।

३०१ बालक-बालिकाओं ने इस प्रश्न के उत्तर भेजे थे। परन्तु हमें खेद के साथ लिखना पड़ता है कि इस बार भी प्रायः सबों ने बिगाड़ कर उत्तर लिखे थे। किसी ने पेंसल से घसीटा था, किसी ने अपने उत्तर पर स्याही गिरा दी थी, किसी ने बेहद काटकूट की थी, किसी ने अपना नाम नहीं लिखा था और किसी ने न जाने कौन सी भाषा में लिखा था। केवल १४ बालकों के उत्तर साफ़, सुन्दर, ठीक-ठीक और सावधानी के साथ लिखे गये थे। उनके नाम नम्बरवार नीचे लिखे जाते हैं—

(१) विद्यावती, कलकत्ता। (२) अवधविहारीप्रसाद गुप्त, सहँतवार। (३) रामगोविन्द प्रसाद, सहँतवार। (४) विश्वनाथ टंडन, कानपुर। (५) सरमनलाल स्वर्णकार, बिलहरी। (६) भूपेन्द्रकुमार, काशी। (७) रामगोपाल मिश्र, कोंच। (८) सुशीलादेवी कोंच। (९) गौरीशङ्कर भट्ट, जबलपुर। (१०) महावीरप्रसाद नेवटिया, फ़तेहपुर। (११) सौभाग्यवती देवी पूरेदान। (१२) सम्पत्तिलाल जसराना। (१३) गिरीशकुमार वर्मा, बिलासपुर। (१४) कैलाशप्रसाद कोटा।

इनमें विद्यावती (कलकत्ता) का उत्तर सर्वश्रेष्ठ समझा गया, अतः उन्हीं को इनाम मिला।

३—इस प्रश्न का उत्तर भेजनेवाले बालक-बालिकाओं की संख्या ५६ थी। अधिकांश ने टाइपराइटरवाला वाक्य अर्थात् "The quick brown fox jumps over a lazy dog" लिखकर भेजा था। केवल एक बालक (विश्वनाथ, सदाकत आश्रम, दीघाघाट) ने अपनी बुद्धि से नया वाक्य सोचकर भेजा था। इसलिए इसी बालक को इनाम दिया गया। वाक्य इस प्रकार है—

"In the bazar of Narayan Ganj. I was very much pleased to see a squirrel on the back of an ox." निम्नलिखित के उत्तर भी प्रशंसनीय थे—

(१) अनन्तराम नजीबाबाद। (२) भृगुदत्त तिवारी, लखनऊ। (३) नूतनकुमार तैलङ्ग, भोपाल। (४) ई० एल मिश्र, जबलपुर।

———

Printed and published by K. Mittra, at The Indian Press Ltd. Allahabad.